भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ।। शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 39 अंक : 1 | 15.1.2016 शुक्रवार (जनवरी - फरवरी) | वार्षिक शुल्क : ₹111.00

बसंतपंचमी – 'शिक्षापत्री' जयंती, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज का प्राकट्योत्सव एवं 3 फरवरी – गुरुहरि काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन!

पुराणों के अनुसार सरस्वती आराधना पर्व **बसंतपंचमी**, जिसे श्रीपंचमी भी कहा जाता है, उस दिन ब्रह्माजी के मुख से माँ सरस्वती का प्राकट्य हुआ था और जड़-चेतन को वाणी मिली थी। अतः इसे विद्याजयंती भी कहा जाता है। सृष्टि में प्राण और स्वर फूंकने के उद्देश्य से ब्रह्मदेव ने सरस्वती की रचना की थी। सो, एक ओर बसंतपंचमी ज्ञान, संगीत और कला की देवी 'सरस्वती' की पूजा का त्यौहार है, तो दूसरी ओर शरद् ऋतु के अंत का प्रतीक और नवीन ऋतु-बसंत के आगमन का सूचक है-जब हवाओं में न अधिक गर्मी होती है और न अधिक सर्दी - एक ऐसा ख़ुशनुमा मौसम जब वृक्षों के पुराने पत्ते झड़ जाते हैं और नई कोपलें जन्म लेती हैं। खेतों में पीली सरसों लहलहाने लगती है। मानो मानव को अंधकारमय जीवन से उबार कर सही राह पर ले जाने के लिए संपूर्ण जगत में एक नवजीवन का संचार हुआ हो! दरअसल परम सत्यस्वरूप का ज्ञान ही इंसान को उसका लक्ष्य प्राप्त करा सकता है।

अतः उमंग, उल्लास, उत्साह, विद्या, बुद्धि और ज्ञान के समन्वय के इस पर्व को अविस्मरणीय बनाते हुए, 12 फरवरी सन् 1826 (माघ शुक्ल 5, विक्रम संवत् 1882) – बसंतपंचमी के दिन **भगवान स्वामिनारायण** ने जीवमात्र के कल्याण हेतु, वड़ताल मंदिर में, शास्त्रों के सार **'शिक्षापत्री'** की भेंट दी। संयोगवश, इस वर्ष भी बसंतपंचमी **12 फरवरी** को है। वड़ताल मंदिर के 'हरि मंडप' में विराज कर, भगवान स्वामिनारायण द्वारा रचित शिक्षापत्री के 212 श्लोकों में प्रभु ने शास्त्रों में दिए गए सनातन धर्म के सभी आचार, व्यवहार एवं नियमों का निचोड़ दिया है, जिससे, इस लोक में अपनी कसर पूरी कराने आए मुमुक्षुजन जीतेजी अक्षरधाम का सुख भोगने की कला सीख सकें और... 116वें श्लोकानुसार – ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म में जुड़ जाएं! अपने आश्रितों को उन्होंने इसे रोज़ पढ़ने की आज्ञा की। 26 फरवरी 1830 को

भगवान स्वामिनारायण ने तत्कालीन गवर्नर सर जॉन मालकम को स्वयं अपने वरद् हस्तों से शिक्षापत्री की हस्तप्रति दी, जो आज भी लंदन की ऑक्सफर्ड यूनीवर्सिटी की 'धी बॉडलीन लाईब्रेरी' को पावन कर रही है।

इसी प्रकार, जीवमात्र की जड़ता दूर करके ब्रह्मरूप होने के अद्‌भुत मर्म को प्रकट करने 1865 में बसंतपंचमी के दिन ही, गुजरात के महेळाव गाँव में, **ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज** प्रकट हुए। उन्होंने स्वामिनारायण संप्रदाय में अडिग निष्ठाभरी शूरवीरता से, श्री अक्षरपुरुषोत्तम युगल उपासना का बिगुल बजा कर, संबंध में आने वाले आश्रितों को, भगवान स्वामिनारायण के 'सदा सनाथ' के अभय वरदान की छत्रछाया प्रदान की। गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने निरंतर प्रगट प्रभु की महिमा का रसपान कराते हुए सभी को अध्यात्म मार्ग की ओर प्रेरित किया-उनकी चेतना को जाग्रत किया। वे जहाँ भी जाते, वहाँ कथावार्ता से माहौल को भर देते। सच तो यह है कि गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने पल-पल अपने वर्तन से भावि के लिए आदर्श स्थापित किया। विपरीत परिस्थितियों में भी विचलित हुए बिना, अपनी निष्ठा के बलबूते पर निडरता से कदम बढ़ाया।

गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज का पूरा जीवन **भगवान स्वामिनारायण** के वचनामृत पर आधारित था। **वचनामृत** गढडा मध्य 26 और 46 में श्रीजी महाराज ने कहा है–

- *जो स्वयं में गुण और दूसरों के अवगुण देखे, वह सत्संगी होते हुए भी आधा विमुख है...*
- *जो भगवान और भगवान के संत में अवगुणों को देखता रहेगा, वह तो भगवान के धाम को पाएगा ही नहीं... भगवान और उनके भक्त में अवगुणों को गिनते रहना पंच महापाप से भी अधिक महापाप है।*

सो, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज कथावार्ता दौरान कभी भी किसी के द्रोह की बात न तो स्वयं करते और यदि कोई किसी अन्य के बारे में अंटशंट बोलता, तो खुद उसे दबाते हुए हमेशा सत्य का पक्ष रखते। कहीं सच्ची बात मारी जा रही हो, तो किसी से भी डरे बिना वे सच्चाई खोल देते।

वडोदरा मंदिर में साधु निरन्नमुक्तदास की कोठारी गोवर्धनभाई से कुछ अनबन हो गई थी। अतः बार-बार वे उनकी बुराई करते और कोठारी के विरुद्ध सभी के कान भरते। गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने उन्हें कई बार समझाया–

'कोठारी तो निःस्वार्थभाव से मंदिर और सत्संग की सेवा करते हैं। ऐसा करते हुए उनके व्यवहार में, तुम्हें यदि कुछ अन्याय होता लगा हो, तो तुम उनसे रूबरू मिल कर बात का खुलासा कर लो। कोठारी तुम्हारी बात सुनेंगे, वर्ना तुम्हारी ओर से मैं उनसे बात करूँगा। लेकिन, यूँ उनका फज़ीता करने की बातें न करा करो।'

लेकिन, निरन्नमुक्तदास पर इस उपदेश का कुछ असर नहीं हुआ। एक दिन गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज सभा में बातें कर ही रहे थे कि निरन्नमुक्तदास वहाँ आकर कोठारी गोवर्धनभाई के विषय में अनुचित शब्दों का प्रयोग करने लगे। सुन कर गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज को बहुत बुरा लगा और उन्होंने फट् से कहा–

'तुम तो साधु ही नहीं। साधु के मुख से ऐसे शब्द शोभा नहीं देते। अब यदि फिर से कोठारी के विरुद्ध ऐसे शब्द बोलोगे तो मैं तुम्हें इस मंदिर में रहने नहीं दूँगा।'

पर, उसे और भी उत्तेजित होते देख गुरुवर्य शास्त्रीजी

महाराज ने गीगा भक्त से कहा–

'इस साधु में असुर का प्रवेश हो गया है। सो, इसे सभा से बाहर ले जाओ।'

और... निरन्नमुक्तदास को सभा से बाहर निकाल दिया। यूँ, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने ऐसा प्रभाव डाला हुआ था कि उनकी हाज़िरी में, सभा में या अकेले में भी कोई भी किसी साधु या हरिभक्त के विरुद्ध कुछ बोल नहीं सकता था।

भगवान स्वामिनारायण का दृढ़ आसरा करवा कर कल्याण कराने हेतु, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज मुमुक्षुओं को खोजते और अपनी प्रतिभा, तेज, ओजस् से सभी के चित्त में बैठ जाते। यूँ जगह-जगह सत्संग कार्य करते हुए गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज एक बार वड़ताल पधारे। वहाँ गोवर्धनभाई कोठारी ने उन्हें एकांत में बुला कर कहा–

'आप जहाँ-जहाँ जाते हो, वहाँ बड़े उत्सव होते हैं और लोग आपकी ओर खिंचे चले आते हैं, जिससे, त्यागी वर्ग में बहुत रागद्वेष उत्पन्न हुआ है और उनसे आपका प्रताप सहन नहीं होता। वे आपके लिए कई परेशानियाँ खड़ी करेंगे, ऐसा मुझे लगता है। सो, मेरा ऐसा कहना है कि सबसे मेल रखने के लिए आप बातें करना कम कर दें।'

कोठारी के ये हित वचन सुन कर गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने कहा–

'जब श्रीजी महाराज ने समाधि प्रकरण चलाया, तब मुक्तानंदस्वामी ने महाराज से कहा था कि आपने सत्संग की प्रथा बिगाड़ दी और पाखंड चलाया है।' यह सुन कर श्रीजी महाराज ने मुक्तानंदस्वामी से शांति और विनयपूर्वक कहा– 'हम इकट्ठे होकर रामानंदस्वामी का भजन करते हैं और करवाते हैं। इसमें यदि उससे हरिभक्तों को कुछ चमत्कार या ऐश्वर्य दिखाई देता हो, तो उसका निवारण हम किस प्रकार कर सकते हैं?'

मुक्तमुनि यह सुन कर खूब उदास हुए। और... थोड़े समय के बाद रामानंदस्वामी ने उन्हें दर्शन दे करके उनकी उदासी का समाधान करते हुए उनकी तसल्ली भी कर दी थी–

'यूँ, हम हरिभक्तों को उपदेश देने के लिए गाँव-गाँव तो घूम नहीं सकते, क्योंकि थोड़ा समय गुजरात में घूमना और फिर सारंगपुर जाना पड़ता है। सो, एक-दो दिन एक जगह पर इकट्ठे होकर हरिभक्त कथावार्ता, भजन-स्मरण का सुख लेते हैं; उसमें लोग प्रभावित होकर खिंचे चले आएँ व उसमें ऐश्वर्य-प्रताप देखें, तो वह श्रीजी का ही कर्तव्य है। फिर भी आप सभी को मेरी इस बात का विश्वास न हो और असंतोष रहता हो, तो अगले साल का उत्सव और वचनामृत की कथा वड़ताल में ही रखेंगे। तब, आपकी शंका दूर होगी।'

गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की ऐसी दिव्यताभरी वाणी सुन कर कोठारी ने कहा–

'स्वामी! मुझे तो कोई वहम या शंका नहीं। परंतु छद्म भेसधारी त्यागी, कोश और कुदाली लेकर, आपको जड़ से उखाड़ने के लिए कटिबद्ध हैं, इससे मुझे उदासी और बेचैनी होती है।'

कोठारी का अपने प्रति भाव देख कर स्वामिश्री बोले–

'हम किसी क्रिया के मालिक हों, तो उसका बोझ हम पर रहेगा। परंतु श्रीजी महाराज कर्ता-हर्ता हैं, ऐसा समझेंगे तो श्रीजी हम पर कोई आँच नहीं आने देंगे। फिर भी यदि दुःख आएगा, तो श्रीजी हमें शुद्ध कंचन जैसा बनाने के लिए कसौटी कर रहे हैं, ऐसा मानेंगे। लेकिन, विरोध देखकर मुझे मन से उदास नहीं होना है। और महाराज ने तो कहा है–

मुझे भगवान मिले हैं, तो जो जीव मेरा संग करेगा, उसके समक्ष मैं कल्याण की बात न करूँ तो मेरा ज्ञान भी किस काम का ? यूँ सोच कर उपदेश देते हुए यदि थोड़ी बहुत परेशानी झेलनी भी पड़े, तो भी परमेश्वर की बात करने में भयभीत नहीं होना चाहिए।

सो, हमें तो श्रीजी की आज्ञानुसार, उनकी महिमा कहने में, परेशानियों से डरना नहीं है।

स्वामीश्री की अडिगता और धीरज देख कर कोठारी खूब प्रसन्न हुए।

गुणातीत पुरुषों के मुख से अकसर सुना है कि जैसे ब्रह्मतत्त्व अनादि का है, वैसे ही माया भी अनादि की है। अतः अपने-अपने कार्यकाल के दौरान ब्रह्मभाव में अखंड रह कर, भीतर में परब्रह्म को धारे, सभी ब्रह्मस्वरूप संतों ने मुक्तों की माया को पहचान कर, न केवल उसका सामना किया है, वरन् प्रभु के बल से उसे परास्त भी किया। हरिधाम के वरिष्ठ संत **प.पू. शास्त्रीस्वामिजी** ने स्वयं **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** का निम्न प्रसंग बताया है, जो गुणातीत विरासत की रीति, नीति और स्थिति का हूबहू दर्शन कराता है...

साक्षात्कार के बाद प.पू. काकाजी बापा की खूब महिमा गाते, जिससे सत्संग में एक खलबली-सी मच गई थी। तत्कालीन अधिकांश समाज गुरुहरि योगीजी महाराज को 'अच्छे साधु' जरूर मानता था, पर भगवान का स्वरूप – गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज का स्वरूप मानने की बात उन्हें रास नहीं आती थी। गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज से जुड़े पुराने सत्संगियों को तो ऐसा लगता कि ऐसी बात करने से गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज गौण होते हैं। सो, दादर मंदिर – 'अक्षरभुवन' के 'यज्ञपुरुष हॉल' में प.पू. प्रमुखस्वामी महाराज ने एक बार प.पू. काकाजी महाराज से एकांत में कहा – आप योगीजी महाराज की जो अपरंपार महिमा गाते हो, उससे कइयों को लगता है कि शास्त्रीजी महाराज गौण होते हैं।

तब प.पू. काकाजी ने अत्यंत विनम्रता से कहा – आप और मैं दोनों शास्त्रीजी महाराज के सेवक हैं। हमने उनका सेवन किया है, उन्होंने ही हमें पाला-पोसा है – परवरिश की है, उन्होंने जो सुख दिया उसके हम भोक्ता हैं – यह हमें मालूम है। लेकिन, बापा ने मुझे जो दर्शन कराया, उसमें अक्षरधाम के सिंहासन पर जहाँ महाराज दिखाई दिए, वहीं उसी सिंहासन पर शास्त्रीजी महाराज को भी देखा और योगीजी महाराज भी दिखाई दिए। तो, उन्हें मैं कैसे पृथक (अलग) कर सकता हूँ। फिर भी, बापा ने मुझसे कहा है कि प्रमुखस्वामी की आज्ञा में रहना। सो, आप जैसा कहें, वैसा करूँ।

तब प.पू. प्रमुखस्वामिजी ने कहा – मैं यह सब कुछ नहीं कहता, यह तो सभी जो बातें करते हैं, वह बात मैंने आपसे कही है।

ऐसे प्रसंग से ख्याल आता है कि इन गुणातीत पुरुषों ने, हमें प्रगट की उपासना से अवगत कराने हेतु, मुक्तों की माया का कैसा सामना किया है !

तो आओ, **3 फरवरी – ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साक्षात्कार दिन** एवं **12 फरवरी – बसंतपंचमी गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज** के प्राकट्य पर्व पर अंतर से प्रार्थना करें कि आध्यात्मिक शूरवीरताभरे आपके एवं गुणातीत स्वरूपों के जीवन प्रसंगों को आधार बना कर, प्रगट प्रभु की मरजी में ही अपनी पूर्णाहुति मान कर, हम अंतर के कुसंग से मुक्त हो जाएँ। साथ ही वर्षों पहले ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज द्वारा लिखित दर्पण सरीखे निम्न लेख में अपना प्रतिबिम्ब देख कर, नए वर्ष में परिवर्तन की राह पर चलें...

निर्मानीभाव का मान

भगवान स्वामिनारायण ने वचनामृत अंत्य. प्रकरण 27 में
'कामी' की अपेक्षा 'मानी' को अतिशय बुरे स्वभाव वाला बताया है।
वह कभी न कभी विमुख होकर सत्संग से हट जाता है।
कामी के ऊपर तो संत दया करते हैं, लेकिन **मानी** की सेवा तो भगवान को तनिक भी जँचती नहीं।
सत्संग में वह सभी के प्रति विपरीतभाव रखते हुए दोष ही देखता रहता है।
फलतः ईर्ष्या, जलन और बराबरी एवं आडंबर, दंभ, घमंड जैसे
मान के रिश्तेदार उससे चिपक जाते हैं और दुःखी करते रहते हैं।
मानी को तो बुद्धिमान व्यक्ति जान लेता है, लेकिन 'निर्मानीभाव का मान' को तो सूक्ष्म बुद्धि वाला,
यदि स्वयं अंतर्दृष्टि करे और गुरुकृपा हो, तो ही खुद जान पाता है।
और... इसी वज़ह से वह जीव प्रगति नहीं कर पाता।
वच. प्रथम-56, मध्य-41, अंत्य. 27, 28 इत्यादि एवं लोया-16, प्रथम-62, 6, 28, 58, सा. 8, का. 6 में
सूक्ष्म मान का स्वरूप, गुण का मान, साधना का मान, उसके लक्षण और उसे टालने के उपाय बताए हैं।
मुख्यतः तो भगवान के **भक्तों की अपार महिमा समझते हुए,** सतत अंतर्दृष्टि करके,
संत के वचन से, दीनता से यदि कोई सेवा करने लग पड़े
तो सूक्ष्म मान भी टल जाता है और वह **'एकांतिक भक्त'** बन जाता है।
लेकिन, यह करना अत्यंत कठिन है।
भक्ति, ज्ञान, जप, तप, वैराग्य या मंदिर की किसी भी क्रिया में यदि मान मिलता हो,
तभी उसे उत्साह से करना जँचता है और उसमें स्वाद आता है।
यह सब सूक्ष्म अभिमान की ही लार है, जिसके टूटने पर जीव बेचैन हो जाता है।
उसने अपने गुण के मान में या स्वप्रयत्न में अच्छाई/ भलाई समझी होती है,
सो उसे अन्यों का अवगुण आता है और उनके साथ द्वेषबुद्धि हो जाती है।
भगवत्प्रसन्नता प्राप्त करने में यह बाधक बन जाती है।
कुल, जाति, वर्ण, आश्रम, तप, आत्मनिष्ठा जैसे **अनेक गुण स्वयं में होते हुए भी,**
यदि बड़े मुक्तों के प्रति मनुष्यभाव आए, तो वे सभी गुण अभद्र हो जाते हैं
और
मोक्ष में-आत्यंतिक कल्याण में– विघ्न रूप बन जाते हैं।
पू. भगतजी महाराज और पू. जागास्वामी के प्रति जातिभाव रखने वाले
त्यागी संतों ने भी भूत योनि को प्राप्त किया है – ऐसा इतिहास बताता है।
निष्काम धर्म से च्युत होने वाला तुरंत ही नज़र आ जाता है,
लेकिन ऐसे संतों-मुक्तों के प्रति मनुष्यभाव रखने वाले निर्मानीभाव का प्रण तोड़ कर अधोगति को ही पाते हैं–
ऐसा भगवान स्वामिनारायण ने स्वयं कई वचनामृतों में बताया है।
सो, मोक्षप्राप्ति के लिए बड़े संत के असाधारण प्रसंग से
ऐसी सूक्ष्म मानवृत्ति को ठुकरा देना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

लेकिन, यह रहस्य पता न होने के कारण, अन्यों के दोष देखते रहते हैं और अवगुण लेते रहते हैं।
इस बात की जाग्रतता रख कर, इसे टालना। गुरुकृपा हो तभी नम्रता का अभिमान ख्याल पड़ता है।
सभी को ज्ञान देता हो, प्रणाम करता हो, प्रभु की महिमा गाते हुए–

'मैं तो किसी काम के लायक नहीं, उनकी कृपा से ही मैं तो यह सब कुछ कर सकता हूँ;
तप, त्याग, सेवा–वे करवाते हैं, तभी मुझसे हो पाती है।'

ऐसा बार-बार बोल कर और दो हाथ जोड़ कर, झुक-झुक कर पैर भी छूता रहता है,
पर अंतर की गहराई में सूक्ष्म सात्त्विक अहं का सर्प उसमें बैठा ही होता है।
किसी प्रसंग पर या निजी मान्यता के भंग होने पर या उसके आदर-सत्कार में कमी रह जाने पर,
सबको वह दिखाई दे ही जाता है।
शब्द तुरंत ही चुभ जाते हैं, भीतर में गुण व्याप्त हो जाता है और मुँह उतर जाता है।
अपनी अपेक्षा समकक्ष या अपने से छोटों की प्रशंसा सुन कर उसे क्षोभ हो जाता है।
लेकिन, **यदि वह अंतर्दृष्टि करे और भगवान व संत को अंतर से प्रार्थना करे,**
तो गुरु उस गुण का मान जरूर बाहर लाकर, उसे अपने समागम में रख कर,
उसकी जीवात्मा से चिपकी मलिन वासना को दूर करता है
और जीव को शांत, सरल स्वभावयुक्त, सुखी कर देता है।
'साधु' होने के बाद ऐसी साधुता, सहिष्णुता और समता सीखनी ही पड़ती है
और तभी–
स्वभाव टलने पर जीव ब्रह्मरूप होता है व धाम का दिव्य निर्गुण सुख जीतेजी ही प्राप्त करता है
एवं
निरंतर अहोहोभाव रहता है। महाराज भी कहते हैं कि–
'स्त्री और धन छोड़ना मुश्किल नहीं, पर मान छोड़ना त्यागी के लिए भी अतिशय कठिन है।'
यह (मान) बड़े-बड़ों को पीछे धकेल देता है। गुरु की कृपा से ही वह टल सकता है।
ब्रह्मस्वरूप संत से यदि (हम) प्रार्थना करें,
तो निर्मानी भक्त बनने का कसब वे तुरंत ही सिद्ध करवा देते हैं–ऐसी दया बरसाते हैं।

यही ऐसे संत की सर्वोपरिता है।

वेदरस में भी निर्मानी वर्तमान पर भगवान स्वामिनारायण ने बखूबी निरूपण किया है।
अनादि मूल अक्षर मूर्ति गुणातीतानंदस्वामी के संबंध से या उनके साधर्म्य को पाए बड़े संत के संबंध से,
जीव निर्दोष, निष्कामी और निर्मानी हो जाता है।
इस बात का रहस्य गुणातीत ज्ञान वालों के लिए
गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने अत्यंत सुगम करके दिया है;
यही मानवजाति पर उनकी महान कृपा और केवल करुणादृष्टि है।
ऐसे संतों की ऐसी दिव्यदृष्टि मुमुक्षओं पर रहे
और निर्दोषबुद्धि दृढ़ करके सभी को एकांतिक धर्म सुलभ हो यही नम्र प्रार्थना है।

– ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज, 1963

[મૂળ ગુજરાતી]

નિર્માનીપણાનું માન

ભગવાન સ્વામિનારાયણે વચ. છેલ્લાના ૨૭મા
કામી કરતાં ય માનીને અતિશય ભૂંડા સ્વભાવવાળો ગણાવ્યો છે.
મોડો વહેલો તે વિમુખ થઈને સત્સંગમાંથી પડી જાય છે.
કામી પર તો સંત દયા કરે છે, પણ **માની**ની સેવા તો ભગવાનને જરાય ગમતી નથી.
સત્સંગમાં તે સૌના અભાવ-અવગુણમાં જ પડતો દેખાય છે.
તેથી ઈર્ષા, મત્સર અને અસૂયા તથા ડોળ, દંભ, અટંટાઈ વગેરે માનનાં કુટુંબીઓ
તેને વળગી પડે છે ને દુ:ખી કરી મૂકે છે.
વળી માની હોય તે તો બુદ્ધિવાળાને જણાઈ જાય,
પણ નિર્માનીપણાનું માન સૂક્ષ્મ બુદ્ધિવાળાને પોતાને જ
પોતે અંતર્દષ્ટિ કરે ને ગુરૂકૃપા થાય તો જ ખબર પડે છે ને તેથી જીવ વૃદ્ધિને પામતો નથી.
વચ. પ્રથમ-૫૬, મધ્ય-૪૧, છેલ્લા-૨૭, ૨૮ વગેરેમાં તથા લોયા-૧૬, પ્રથમ-૬૨, ૬, ૨૮, ૫૮, સા. ૮, કા. ૬માં સૂક્ષ્મ માનનું સ્વરૂપ, ગુણનું માન, સાધનનું માન, તેનાં લક્ષણો
અને
તે ટાળવાના ઉપાયો બતાવ્યા છે.
મુખ્યત્વે તો ભગવાનના **ભક્તોનો અપાર મહિમા સમજી** સતત્ અંતર્દષ્ટિ કરી,
સંતને વચને ગરીબપણું પકડીને જો સેવા કરવા મંડી પડે
તો સૂક્ષ્મ માન પણ ટળી જાય છે ને **'એકાંતિક ભક્ત'** બને છે.
પણ, એ વાત બનવી ઘણી જ કઠિન છે.
ભકિતમાં, જ્ઞાનમાં, જપ, તપ, વૈરાગ્ય કે મંદિરની કોઈ પણ ક્રિયામાં
જો માન મળતું હોય તો જ તે ઉત્સાહથી કરવું ગમે છે ને સ્વાદ આવે છે.
આ બધી જ સૂક્ષ્મ અભિમાનની જ લાળ છે અને તે ટેકાઓ તૂટી જતાં જીવ બેબાકળો થઈ જાય છે.
પોતાના ગુણનું માન કે સાધનોની સારપ મનાઈ હોય,
તેથી જ બીજાનો અવગુણ આવે છે અને આંટી પડી જાય છે. પ્રભુકૃપા પ્રાપ્ત કરવામાં તે અવરોધરૂપ બને છે.
કુળ, જાતિ, વર્ણ આશ્રમ, તપ, આત્મનિષ્ઠા જેવા **અનેક ગુણો પોતામાં હોય,**
પણ જો મોટા મુક્તોમાં મનુષ્યભાવ પરઠાય, તો તે સર્વ અભદ્ર બની જાય છે
અને
મોક્ષમાં-આત્યંતિક કલ્યાણમાં વિઘ્નરૂપ બને છે.
પૂ. ભગતજી મહારાજ અને પૂ. જાગાસ્વામીમાં જાતિભાવ પરઠનારા
ત્યાગી સંતો ભૂતની યોનિને જ પામ્યા, તેમ ઈતિહાસ જણાવે છે.
નિષ્કામી વર્તમાન તોડનાર તુર્ત જ દેખાઈ આવે, પણ આવા સંતો-મુક્તોમાં મનુષ્યભાવ પરઠનારા
નિર્માની વર્તમાન તોડી મહાન અધોગતિને જ પામે છે–
તેમ ભગવાન સ્વામિનારાયણે જ ઘણાં વચનામૃતોમાં જણાવ્યું છે.

તેથી મોટા સંતના અસાધારણ પ્રસંગથી
આવી સૂક્ષ્મ અભિમાનવૃત્તિ તોડવાની અત્યંત આવશ્યકતા મોક્ષ પ્રાપ્તિ માટે ગણાય.
પણ, આ રહસ્ય ખબર ન હોવાથી બીજાનું જોવાય છે ને અવગુણ લેવાય છે.
આ વાતનું જાણપણું રાખી, એ ટાળવું.
ગુરૂકૃપા થાય ત્યારે જ નમ્રતાનું અભિમાન જણાય છે.
બધાંને જ્ઞાન કરતો હોય, પ્રણામ કરતો હોય, પ્રભુનો મહિમા ગાતાં—
'હું તો કાંઈ ગણત્રીનો નથી, તેની કૃપાથી હું તો બધું કરી શકું છું; તપ, ત્યાગ, સેવા તે કરાવે છે ત્યારે મારાથી થાય છે.'
આમ વારંવાર બોલી અને બે હાથ જોડી લળી-લળીને પગે પણ લાગે,
છતાં ઊંડે ઊંડે સૂક્ષ્મ સાત્ત્વિક અભિમાનનો સર્પ એનામાં ભરાઈ રહેલો જ હોય છે.
તે એવા કોઈ પ્રસંગે કે માન્યતાનો ભંગ થતાં કે એના આદરસત્કારમાં ખામી આવતા,
સર્વને કળાઈ આવે છે.
શબ્દ તરત જ લાગી જાય છે, ગુણ વ્યાપી જાય છે અને મોઢું પડી જતું લાગે છે.
પોતાની અપેક્ષા સરખે સરખાના કે પોતાથી નાનાનાં વખાણ થતાં સાંભળી ક્ષોભને પામી જાય છે.
પણ **એ જો અંતર્દૃષ્ટિ કરે અને ભગવાન કે સંતને અંતરથી પ્રાર્થના કરે,**
તો જરૂર તે ગુણનું માન ગુરૂ બહાર લાવી, સમાગમમાં રાખી
જીવને ચોંટેલી મલિન વાસનાને દૂર કરે છે
અને જીવને શાંત, સરળ સ્વભાવયુક્ત સુખિયો કરી દે છે.
'સાધુ' થયા પછી આવી સાધુતા, સહિષ્ણુતા ને સમતા શીખવાં જ પડે છે
અને
ત્યારે જ સ્વભાવ ટળતાં જીવ બ્રહ્મરૂપ થાય છે ને ધામનું દિવ્ય નિર્ગુણ સુખ દેહ છતાં જ પ્રાપ્ત કરે છે ને
અહોહોપણું રહે છે. મહારાજ પણ કહે છે કે—
'સ્ત્રી અને ધન છોડવાં અઘરાં નથી; ત્યાગી હોય છતાં માન છોડવું અતિશય કઠણ છે.'
મોટા-મોટાને એ (માન) પાછા પાડે છે. ગુરૂની કૃપાથી જ તે ટળી શકે છે.
બ્રહ્મસ્વરૂપ સંતને પ્રાર્થના કરીએ તો—
નિર્માની ભક્ત બનવાની વાત તેઓ તરત જ સિદ્ધ કરાવી દે એવી દયા વરસાવે છે.
એ જ આવા સંતનું સર્વોપરિપણું છે.
વેદરસમાં પણ નિર્માની વર્તમાન પર ભગવાન સ્વામિનારાયણે સુંદર નિરૂપણ કર્યું છે.
અનાદિ મૂળ અક્ષરમૂર્તિ ગુણાતીતાનંદસ્વામીના સંબંધે
કે તેમના સાધર્મ્યને પામેલા મોટા સંતના સંબંધે જીવ નિર્દોષ, નિષ્કામી અને નિર્માની થઈ જાય છે.
આ વાતનું રહસ્ય ગુણાતીત જ્ઞાનવાળાને ગુરૂવર્ય શાસ્ત્રીજી મહારાજે અત્યંત સુગમ કરી બતાવ્યું છે;
તે જ માનવજાતિ ઊપર મહાન કૃપા અને કેવળ કરૂણાદૃષ્ટિ છે.
આવા સંતોની તેવી દિવ્યદૃષ્ટિ મુમુક્ષુઓ પર રહે
અને નિર્દોષબુદ્ધિ દૃઢ થતાં, સર્વને સુલભ થાય તે જ નમ્ર પ્રાર્થના છે.

— બ્રહ્મસ્વરૂપ કાકાશ્રી, ૧૯૬૩

अन्नकूट कृपाप्रसाद

…हम मानते हैं कि बड़ी-बड़ी कथाओं, पाठ-पूजाओं, जगरातों में जाएँ वह सत्संग है। पर, वह सत्संग नहीं है। गुणातीतानंदस्वामी स्पिरीच्युआलीटी की टॉप पर थे। **उन्होंने एक बात कह दी कि भगवान के भक्तों में आत्मबुद्धि व प्रीति – वही सत्संग है।** 'ही'का मतलब – वह ही सत्संग है। मतलब दूसरी चीज़ व्यर्थ है…

आप लोगों ने एक बात कही कि गुरुजी हमेशा कुटुंबभाव के सत्संग पर ज़ोर देते रहते हैं। आपकी बात भी सही है क्योंकि मैंने माना है कि सत्संग यही है। इस स्टेज पर जो पिक्चर है, वह कुटुंबभाव से जिस प्रकार दो फॅमिलीज़ ने जीवन जिया, उसे रीप्रॅज़न्ट करता है। काकाजी-पप्पाजी तो वास्तव में दो भाई ही थे, लेकिन कांतिकाका और बा से इनका ऐसा कोई रिलेशन नहीं था। काकाजी और पप्पाजी करमसद के और कांतिकाका व बा यानि – मां-बेटे वीरसद के थे। मैं 1954 में सत्संग में - ताड़देव के मुक्तों के परिचय में आया। काकाजी के 6-डी का माहौल, वहां के मुक्तों को देख कर एक बात मुझे पहले से बैठ गई थी कि ये लोग हमसे कुछ अलग हैं।

…गुणातीतानंदस्वामी की बातों में मैंने पढ़ा था – **આપણામાં અને આ સાધુમાં** – हम में और साधु में – गुणातीतानंदस्वामी की परंपरा के पहुंचे हुए संत में **જેટલો માણસ અને જાનવરમાં ફરક છે એટલો ફરક છે** – इंसान और जानवर के बीच में जैसा फर्क है, वैसा हमारे और संत के बीच में होता है। यानि, पूरी योनि अलग है। आज की तारीख में भी भले ही ज्योति बहन वगैरह हमेशा मुझसे कहलवाती हैं कि *आप समकक्षा के हो गए…* तब भी मेरे मन में हमेशा यही भाव रहता है कि कहां ये लोग, और कहां मैं? यह एक महिमा है। यह बात समझ में आ जाए, तो बहुत बड़ा काम हो जाएगा। याद रखें, **गुणातीत समाज से जुड़ा हुआ कोई भी व्यक्ति सामान्य नहीं है।** भले लल्लू-पंगू दिखाई पड़ता हो, पर वो लल्लू-पंगू – नत्थू गैरा नहीं है। प्रभु के संबंध से वह एक अलग एंटीटी है – दिव्य एंटीटी है…

गुणातीत समाज की शुरुआत ही **'योगी परिवार'** से हुई। 1952 में काकाजी को हुए साक्षात्कार के बाद से ही बोला जाने लगा – *योगी परिवार, योगी परिवार!* 1986 में काकाजी के आख़िरी आशीर्वचन में भी कई बार रिपीट हुआ है– *'योगी परिवार, योगी परिवार, योगी परिवार!'* 1954 में मैं सत्संग में आया, पर '58 तक मुझे पता नहीं था कि काकाजी जो ऊपर रहते हैं, और बा जो नीचे रहती हैं, वे दो अलग-अलग परिवार हैं। मैं ऐसा समझता था कि एक ही फॅमिली है, पर इतनी जगह में सब इकट्ठे रह नहीं सकते, सो ऊपर-नीचे रहते हैं। आपस की इतनी रसबसता-एकता थी कि इनका चूल्हा तक एक था!

यही अपने सत्संग का मिशन है। आप पूछोगे यह क्यों? आप सब जो आए हो, हरेक के मन में एक भावना होगी कि हमें ऐसा आशीर्वाद मिल जाए कि हमेशा सुखी, निश्चिंत, निर्भय रहें और हमारी समृद्धि बढ़ती रहे।

इसकी यह चाबी है कि **सच्चे संत के माध्यम से हम जीवन जिएँ।** संत, सच्चे संत होने चाहिएँ – यह बात भी पक्की समझना। बहुत जरूरी है कि संत को पहले परख लो। बिना कोई बात किए भी वो तुम्हें एहसास करा दे कि मैं तुम्हारा हूँ या हमें ऐसा आभास हो जाए कि स्वामी मेरे हैं – अपने हैं। एक दिवाली के कार्ड में या मार्च के कार्ड में सन्टेंस लिखा था जो मुझे भी खुद को बहुत पसंद आ गया था कि हम अशोकविहार मंदिर में जाते हैं, सो हमें एक तसल्ली रहती है कि आधी रात को भी हमारा कोई अपना बैठा है। मतलब एक आधार, एक निर्भयता, निडरता, निश्चिंतता, सुख, शांति, समृद्धि का रूट ऐसे संतों या ऐसे मंदिरों के द्वारा है। यहां से एक कॅलेन्डर भी निकला था, जिस पर लिखा था – ***'मंदिर का प्राण है संत!'***

कई बातें ऐसी हैं जो हम लोगों को समझ भी नहीं आती। थोड़े दिन पहले मैं अंकल से कह रहा था – *हम अब सीनियर सीटिज़न की कटेगरी में आ गए हैं।* तो, अंकल मुझसे कहने लगे – *तुम नहीं लगते।* मैंने कहा – *हाथ पकड़ कर तो चलना पड़ता है।* मुझे कइयों ने यहाँ तक कहा – *आपका फेस तो ऐसा का ऐसा ही है।* इसको मैं क्या समझता हूँ कि आशीर्वाद काम करते हैं। जो आशीर्वाद मुझे मिले हैं, वो सभी को भी मिल सकते हैं।

...सत्संग में जब मैं नया-नया आया, तब एक बात मेरे पढ़ने में आई थी – ***બીજા સહુ થાશે ધૂળ ધાણી, રહેશે તમારા મુખનું પાણી,*** मतलब – और सब के मुंह लटक जाएँगे, पर तुम्हारे मुंह का तेज ऐसा ही रहेगा। बहुत समझने लायक यह बात है कि यह सत्संग ऐसा है कि यहां हर चीज़ हमें मुफ्त में मिलती है। यह बात काकाजी करते भी थे – ***આવા મફતિયા ફરી નહીં મળે ,*** मतलब – मुफ़्त में देने वाला फिर ऐसा नहीं मिलेगा ! इसीलिए कोई नई बात करनी नहीं है। सिर्फ ऐसे संत के साथ जुड़ जाओ।

...थोड़े दिन पहले एक गुजराती भाई साहब आए थे। वे वचनामृत लेकर गए। फिर आकर मुझसे कहा – *मैंने वचनामृत पढ़ा... इसमें कुछ पढ़ने लायक है ही नहीं।* मैंने पूछा – *क्या हो गया ?* कहने लगे – *पहले 15 पेज पढ़ो या कहीं से भी खोल के 15 पेज पढ़ो और फिर जो पेज खोलोगे, तो एक ही बात की रिपीटेशन है और कुछ नहीं है।* उन्हें पता नहीं था कि वचनामृत के पन्ने-पन्ने पर संत की महिमा और संत के वचन के ऊपर ज़ोर दिया गया है। गुणातीत फिलोसॉफी का यही क्रक्स है।

क्या बात कर रहे थे हम ? हाँ, मैंने सुना था कि दूसरे सबके फेइस लटक जाएँगे, लेकिन तुम्हारा फेइस चमकीला रहेगा, मतलब लटकेगा नहीं। मुझे हुआ कि यह बड़ी समझने लायक बात है। मुझे सत्संग की ए.बी.सी. पता नहीं थी, पर सभा में यह सुनकर मैं सोचने लगा। मैंने योगीजी महाराज से पूछा, तो उन्होंने समझाने की कोशिश की। पर वे जो बात कर रहे थे उसे समझने का मेरा लेवल ही नहीं था। बापा ने समझाया भी कि यह बात जो महाराज ने कही है वो स्वामिनारायण के संतों के लिए है कि इनके मुंह का तेज बना रहेगा। बाकी सब, जिन्हें वैरागी बाबा बोले जाएँ, उनका तेज नहीं रहेगा। पर, मैं वह समझा नहीं। मैं पूछता रहा – *इसका*

रास्ता क्या? बापा समझ गए कि मैं यह पूछता हूँ कि मेरा क्या होगा वो बता दो। तो बापा ने एकदम कहा– *लो थापो, दादुभाई साहेब से संबंध बनाए रखना (જાળવી રાખજો), तुम्हारे मुख का पानी (तेज) नहीं जाएगा।* **ये कैसे आशीर्वाद कि जो कुछ भी हमें प्राप्त करना, लेना या समझना है वो ऐसे संत के जरिए।** संत की बस एक यही चाह है कि जो-जो हमारे संबंध में आए हैं, वो सब एकजुट, एक फॅमिली होकर रहें। इनके जीवन में प्रायॉरिटी संत की होनी चाहिए।

प्रॉयरिटी की मैं बात करता हूँ। हम बोलते और समझते हैं कि हमारे जीवन में प्रायॉरिटी पर ऐसे संत हैं। यह बात सच में दिल से मानी हो, तो ऐसा होगा कि ये संत मेरे हैं और इनके लिए मैं हूँ। मैंने एक बार बात की थी कि महाराज को दादाखाचर से कुछ काम पड़ा। वे बोले– *दादा को बुलाओ।* सेवक बुलाने गया तो दादाखाचर उस समय शेविंग करवा रहे थे। सेवक ने कहा– *बापू, महाराज बुला रहे हैं।* वे झट् से, आधी शेविंग में ही मुँह पर तौलिया या कपड़ा लगा करके, एकदम से वहाँ पहुंच गए। वे कहलवा भी सकते थे– *'आ रहा हूँ।'* पर, हमारे अपने जीवन में वो प्रायॉरिटी नहीं है कि प्रभु आवाज़ दें और हम पहुंच जाएँ। हम प्रभु से एक्स्पॅक्ट जरूर करते हैं कि हम प्रार्थना करें और वे तुरंत सुनें, लेकिन प्रभु के लिए हम इतने तैयार नहीं रहते। क्यों? क्योंकि हमारे लिए वे प्रायॉरिटी पर नहीं हैं– हक़ीक़त में नहीं हैं। **प्रभु को हमारी कितनी प्रायॉरिटी होगी! संतों को भी हमारे साथ कितना अपनापन होगा!** आज तुम आनंदी दीदी को फोन करोगे, तो तुम्हारी डीमान्ड तुम घर पहुंचो उससे पहले सेट हो गई होगी। एक फॅमिली नई -नई संपर्क में आई। मियां-बीबी के बीच में आपस में कुछ मनमुटाव हो गया। मैंने सोचा कि उन्हें बुला कर डाँटना पड़ेगा। लेडीज़ के साथ तो हम बात कर नहीं सकते। मैंने सोचा जॅन्ट को बुला कर खड़काऊंगा। पर, उससे पहले ही मुझे मॅसेज मिल गया कि आनंदी दीदी ने सीज़फायर करा दी है! यह तो व्यावहारिक बात की। इसी तरह **अगर आपको अपने घर में सुख, शांति, आनंद, निर्भयता, निश्चिंतता और समृद्धि चाहिए, तो ऐसे संत को अपने जीवन में-फॅमिली के सेंटर में- रख कर जिया करना।** यह रखोगे तो आपके बच्चे भी आपके रहेंगे। आपके संस्कार को पकड़े रखेंगे। वर्ना अब माहौल ऐसा बन रहा है कि बच्चे काबू से बाहर चले जाएँगे। आप भी अनुभव करते होंगे कि आपके बच्चे आपकी नहीं मानते, शायद सामने जवाब भी दे देते होंगे। पर, आप यदि कहोगे कि मैं दीदी को बता दूंगा या संतों से बात करता हूँ, तो एकदम एग्रीएबल टु एवरीथिंग हो जाते हैं। मैं नहीं कहता कि हमें उन्हें सबमिसीव रखना है; लेकिन बिगड़ते हुए माहौल से बचने- और इससे भी अधिक- हमेशा एक अंडर ए सेफ अम्ब्रेला हम सब रहें, इसके लिए यह संबंध हम दिन-प्रतिदिन पक्का करते रहें। बात और कोई नई नहीं करनी है, एक ही करनी है कि **ऐसे संत के साथ जुड़े रहो- ऐसे संत के साथ जुड़े रहो-ऐसे संत के साथ जुड़े रहो, बाकी का सब काम अपने आप होता रहेगा।**

– प.पू. गुरुजी

12 नवंबर 2015

✡✡✡

2016 के शुभाशीष... अहो ! 'स्वामिनारायण' महामंत्र !!

31 दिसंबर 2015 की 'मध्यरात्रि महापूजा' के बाद प.पू. गुरुजी ने आशीर्वाद देते हुए बात की–
....पहले भी मैं एक बार कह चुका हूँ कि आज के दिन इस समय पर (रात को)
दिल्ली में यंग्स्टर्स जनरली कनॉट प्लेस, साउथ एक्स की ओर भटकने के लिए जाते हैं।
इसके बजाय आप सब इतनी भारी संख्या में, और खास करके यंग्स्टर्स भी यहां आए हैं,
वो भगवान स्वामिनारायण का प्रभाव है।
क्योंकि, यह फिलोसॉफी जीवंत-लिविंग है; इसके बिना ऐसा प्रभाव नहीं पड़ सकता।
ठीक है, नया साल है तो मंदिर आकर दर्शन करके चले जाओ, वह बात अलग है।
लेकिन, एक आस्था से महापूजा में तकरीबन डेढ़ घंटा आप सब बैठे रहे और वो भी आधी रात को !
सो, आशीर्वाद तो हमारे मांगे बिना ही भगवान बरसा देंगे।
'अब भगवान का भजन ***'स्वामिनारायण'*** *नाम का करना'*– कह कर
भगवान स्वामिनारायण ने खुद, मेरे ख्याल से, 1801 में आज के ही दिन और आज के ही वार–गुरुवार को,
गाँव फणेणी में–**'स्वामिनारायण' मंत्र** का उद्घोष किया।
इस मंत्र के कारण श्री सहजानंदस्वामी भगवान 'स्वामिनारायण' के नाम से पहचाने गए हैं–प्रसिद्ध हुए हैं।
इससे पहले के मंत्र किसी अवतार ने स्वयं नहीं दिये हैं।
'श्रीकृष्णं शरणं मम' या 'श्रीराम जय राम जय जय राम' जैसे मंत्र भी
इन अवतारों के देह त्याग के वर्षों बाद अस्तित्व में आए।
इससे अतिरिक्त, प्राचीन वेदमंत्र या आर्षदृष्टा ऋषि-मुनियों द्वारा दिए गए मंत्र-गायत्री मंत्र इत्यादि
विधिवत् और शुद्ध उच्चारण के साथ जपने पड़ते हैं।
वर्तमान काल में इन विधि को जानने वाले और ऐसे पवित्र ब्राह्मण भी रहे नहीं हैं।
'स्वामिनारायण' मंत्र की विशेषता यह है कि
यह मंत्र स्वयं भगवान द्वारा दिया गया है; सो यह खूब बलवान मंत्र है।
इससे भी अधिक, भगवान स्वामिनारायण ने स्वयं
या
ऐसे ब्रह्मस्वरूप संतों और जीवनमुक्तों द्वारा मानवस्वरूप में पृथ्वी पर अखंड रहने के आशीर्वाद देकर
मानवजाति पर अत्यंत करुणा बरसाई है।
अतः उस प्रगट स्वरूप या मंत्र की धारक विभूति की स्मृति सहित,
विधिनिषेध से परे, यदि इस मंत्र का जाप करें, तो उसका अद्भुत और अनंत गुणा फल मिलता है।
नापातोल की बात नहीं, लेकिन समझने की बात है कि
आज केवल यही एक ऐसा मंत्र है जो जीवंत है।
दूसरे मंत्रों को जीवंत रखने वाली, मंत्र को प्रगटाने वाली विभूतियाँ अब मौजूद नहीं हैं
और
मंत्र के लिए जो शुद्धि चाहिए, वह शुद्धि भी नहीं रही है।
'स्वामिनारायण' मंत्र के लिए तो महाराज ने आशीर्वाद दिया हुआ है कि

आप कैसे भी माहौल-अवस्था में हों– '**पवित्र देह से** या **अपवित्र देह से**' इस मंत्र का जाप करो।
इसमें बाह्य शुद्धि की अनिवार्यता नहीं है। यह मंत्र ही माहौल को शुद्ध-पवित्र कर देगा।
यूँ '**स्वामिनारायण**' मंत्र अनोखा है।
सभी जगत में रहते हैं, सो बाह्य और आंतरिक जगत की 'माया' परेशान करेगी ही।
लेकिन, स्वामिनारायण भगवान ने हमें इतना बढ़िया और सर्वोत्तम अमोघ शस्त्र दिया और कहा है–
'बाह्य और आतंरिक जगत की माया के सामने इस शस्त्र का–इस मंत्र का उपयोग करना।'

* माहौल खराब हो, क्लेश-झगड़ा-तकरार होती रहती हो,
  घर में या बाहर जहाँ भी हों वहाँ डीस्टर्बन्स-मुश्किलें आती रहती हों,
  लेकिन इस मंत्र का जाप किया करोगे तो सब कुछ अपने आप शांत हो जाएगा।
* हमारे आंतरिक जगत के हठ, मान, ईर्ष्या के भाव भी इस मंत्र जाप से टल ही जाएँगे-पिघल जाएँगे!
  ऐसा अतिशय ताक़तवर यह मंत्र है।
* इस मंत्र की महिमा समझाते हुए मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने कहा है–
  ***'स्वामिनारायण' मंत्र** महाबलवान (बलवान नहीं, महाबलवान) है।*
  इस मंत्र के जाप से–

1. *काले नाग का ज़हर भी उतर जाता है।*
2. *जीव पंचविषय के राग से मुक्त हो जाता है।*
   कितना बड़ा वरदान दे दिया! हरेक को 'विषय' परेशान कर देते हैं। प्रगट के उपासकों के लिए मनमानी करना, वो 'विषय' है। हमें बाहर के तो कोई 'विषय' परेशान नहीं कर पाएँगे। हम डेढ़ घंटे से यहां महापूजा में बैठे हुए हैं। बाहर 'विषय' के कितने ढोल बज रहे हैं, लेकिन वे आप लोगों को खींच पाए क्या? तो, बाहर के 'विषय' तो हमें परेशान नहीं करते। पर मनमाने ढंग से जीना, मनमानी करना परेशान कर जाता है। हम इस मंत्र का जाप किया करेंगे, तो वह वृत्ति भी टल जाएगी।
3. *जीव ब्रह्मरूप हो जाता है।*
   जीव की यह अल्टीमेट-चरम कक्षा! ब्रह्मरूप हो जाएँ–मतलब भगवान हमारे भीतर अखंड निवास करके रहें। हम भगवान के अखंड वाहक-धारक बन जाएँ।
4. *शरीर (देह) में बीमारी आई हो तो वह दूर हो जाती है।*
   दवाई (औषधि) काम करने लग जाती है। यह एक बहुत बड़ा प्रभाव है, लेकिन हम इसे आज़माते नहीं हैं।
5. *काल, कर्म और माया के बंधन से मुक्ति मिलती है।*
6. *बेचैनी/ उलझन/ घबराहट टल जाती है।*
   मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने भी अपनी बातों में आशीर्वाद दिया है–
   ''बेचैनी/ उलझन/ घबराहट हो तो 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' भजन करना; वो टल जाएगी।''

भीतर में लगे घावों को भरने के लिए आत्मा को जो बल चाहिए–वह भी यह मंत्र देता है।
अंतःकरण के घाव भी इस मंत्र के जाप से भर जाते हैं।
कई बार बिना वजह भी मन व्याकुल/ उदास/ बेचैन हो जाता है। मैंने कहा भी है कि–
किसी भी प्रकार की परेशानी/ संकट या मन की उलझन हो, तो इस 'कल्पवृक्ष' हॉल में बैठ कर,

मूर्तियों के दर्शन करते हुए, भजन करने लग जाओ। मूर्तियाँ भी खूब सोणी हैं।
पर, हम खामखाह भटकते रहते हैं।
हॉल में बैठकर स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण... भजन करेंगे,
तो 15-20 मिनिट में ही माइन्ड एकदम रिलेक्स-फ्रेश हो जाएगा।
प.पू. काकाजी तो कहते– ***'स्वामिनारायण'*** *मंत्र खुल कर - फ्रीली इस्तेमाल करो...*
पूरे खुले दिल से - खुले मन से बिना हिचक इसका इस्तेमाल करो। भगवान ने हमें यह जो शस्त्र दिया हुआ है, उसे पूरे नए साल में आज़माओ। कहा जाता है न कि राम की मूर्ति से ज्यादा उनका नाम पावरफुल है। इस तथ्य को पकड़ कर 2016 के साल में हम **'स्वामिनारायण'** मंत्र का फ्रीली इस्तेमाल करें। बिना कहे महाराज हमारी हर पल - हर प्रकार से रक्षा करते ही रहेंगे।

प.पू. काकाजी को तो हमने देखा है कि वे खुद लगातार मंत्रजाप किया करते और हमसे भी करवाते ! मेरे ख्याल से समग्र स्वामिनारायण संप्रदाय के सभी मंदिरों और केन्द्रों में मिलकर जितनी धुन हुई होगी, उससे अधिक धुन प.पू. काकाजी के पास ताड़देव में हुई होगी। वे तो कितने बुद्धिशाली ? फिर भी, हर एक समस्या का समाधान उन्होंने धुन से दिया। सो, बुद्धिशाली वही है, जो भजन करे – केवल भजन का ही आधार ले।

आत्मा की खुराक 'भजन' है। धुन - प्रार्थना हमारे जीवन में सर्वोत्तम काम करेगी, करेगी और करेगी ही। इससे हमें जो सुख-सुविधा मिली है, उसका आनंद महसूस कर सकेंगे और जीवन में खुशी प्रगटेगी।

[*ગુજરાતી અનુવાદ*]

૨૦૧૬ના શુભાશીષ... અહો ! 'સ્વામિનારાયણ' મહામંત્ર !!

૨૦૧૫ના ડિસેંબરની ૩૧મીએ 'મધ્યારાત્રિ મહાપૂજા' પછી પ.પૂ. ગુરૂજીએ આશીર્વાદ આપતા વાત કરી –
...અગાઉ પણ મેં વાત કરી છે કે આજના દિવસે આ સમયે (રાત્રે)
દિલ્હીમાં યંગ્સ્ટર્સ જનરલી કનૉટ પ્લેસ, સાઉથ એક્સ બાજુ રખડવા જતા હોય છે.
એને બદલે તમે બધાં આટલી ભારી સંખ્યામાં અને ખાસ કરીને યંગ્સ્ટર્સ પણ અહીં આવ્યા છો,
એ ભગવાન સ્વામિનારાયણનો પ્રભાવ છે.
કારણ કે આ તત્ત્વજ્ઞાન જીવંત-લિવિંગ છે ; એ વગર આવો પ્રભાવ પડી ન શકે.
ઠીક છે, બેસતું વરસ છે, તો મંદિરે આવી, દર્શન કરીને જતા રહો, એ વાત જુદી છે.
પણ, એક આસ્થાથી મહાપૂજામાં લગભગ દોઢ કલાક સુધી તમે બેસી રહ્યા અને એ પણ અડધી રાત્રે !
એટલે, આશીર્વાદ તો માગ્યા વગર જ ભગવાન વરસાવી દેવાના.
''હવે ભગવાનનું ભજન ***'સ્વામિનારાયણ'*** *નામે કરજો''* **– કહી**
ભગવાન સ્વામિનારાયણે સ્વયં મારા ખ્યાલ પ્રમાણે ૧૮૦૧માં
આ જ દિવસે ને આજના વારે જ - ગુરૂવારે ગામ ફણેણીમાં 'સ્વામિનારાયણ' મંત્રનો ઉદ્‌ઘોષ કર્યો.
આ મંત્રને લઈને શ્રી સહજાનંદસ્વામી 'સ્વામિનારાયણ' ભગવાન તરીકે ઓળખાયા છે - પ્રસિદ્ધ થયા છે.
આ પહેલાંના મંત્રો કોઈ અવતારે સ્વયં આપ્યા ન્હોતા.
'શ્રીકૃષ્ણ શરણં મમ' કે 'શ્રીરામ જય રામ જય જય રામ' જેવા મંત્રો પણ
આ અવતારોએ દેહ છોડયાને વર્ષો પછી અસ્તિત્વમાં આવ્યા.

વળી, પ્રાચીન વેદમંત્રો કે આર્ષદૃષ્ટા ઋષિ-મુનિઓએ આપેલા મંત્રો – ગાયત્રી મંત્ર વગેરે
વિધિવત્ ને શુદ્ધ ઊચ્ચાર સાથે જપવાના હોય છે.
વર્તમાન કાળે એ વિધિના જાણકાર ને એવા પવિત્ર બ્રાહ્મણો પણ રહ્યા નહીં.
'સ્વામિનારાયણ' મંત્રની વિશેષતા એ છે કે–
ભગવાને સ્વયં આપેલો આ મંત્ર છે ; એટલે ખૂબ તાકાતવાળો મંત્ર છે.
વળી, ભગવાન સ્વામિનારાયણે માનવજાતિ પર અત્યંત કરૂણા વરસાવી પોતે સ્વયં
કે
એવા બ્રહ્મસ્વરૂપ સંતો અને જીવનમુક્તો દ્વારા
પૃથ્વી પર માનવસ્વરૂપે અખંડ રહેવાના આશીર્વાદ આપ્યા છે.
તેથી એ પ્રગટ સ્વરૂપની – એ મંત્રની ધારક વિભૂતિની સ્મૃતિ સહિત,
વિધિનિષેધથી પરના આ મંત્રનો જો જાપ કરવામાં આવે તો એનું અદ્‌ભુત ને અનંતઘણું ફળ મળે છે.
સરખામણીની વાત નથી, પણ સમજવું પડે કે
આજની તારીખે આ એક જ મંત્ર એવો છે જે જીવંત છે.
બીજાં મંત્રને જીવંત રાખવાવાળી-મંત્રને પ્રગટાવેલી વિભૂતિઓ હવે હયાત નથી
અને
મંત્ર માટે જે શુદ્ધિ જોઈએ, એ પણ રહી નથી.
'સ્વામિનારાયણ' મંત્ર માટે તો મહારાજે આશીર્વાદ આપ્યા છે કે
તમો ગમે તેવી પરિસ્થિતિમાં હો- **'પવિત્ર દેહે** કે **અપવિત્ર દેહે'** આ મંત્રનો જાપ કરો.
એ માટે બાહ્ય શુદ્ધિની અનિવાર્યતા નથી. આ મંત્ર જ વાતાવરણને શુદ્ધ-પવિત્ર કરી દેશે.
આ પ્રકારે **'સ્વામિનારાયણ'** મંત્ર અનોખો છે.
સૌ જગતમાં રહ્યા, તેથી બાહ્ય ને આંતરિક જગતની 'માયા' હેરાન કરવાની જ.
પણ, સ્વામિનારાયણ ભગવાને આપણને આ સરસ ને સર્વોત્તમ અમોઘ શસ્ત્ર આપ્યું ને કહયું–
'બાહ્ય ને આંતરિક જગતની માયા સામે આ શસ્ત્રનો-આ મંત્રનો ઉપયોગ કરજો.'

* વાતાવરણ ખરાબ હોય, કલેશ-કંકાસ-તકરાર થયા કરતી હોય,
ઘરમાં કે બ્હાર જયાં હોઈએ ત્યાં ડીસ્ટર્બન્સ આવ્યા કરતા હોય, મુશ્કેલીઓ આવ્યા કરતી હોય,
પણ આ મંત્રનો જાપ કર્યા કરીએ એ બધું એની મેળે શાંત થઈ જશે.

* આપણા આતંરિક જગતના હઠ, માન, ઈર્ષ્યાના ભાવો પણ આ મંત્રનો જાપ કરવાથી
ટળી જ જાય-ઓગળી જ જાય ! એવો અતિશય તાકાતવાળો આ મંત્ર છે.

* આ મંત્રનો મહિમા સમજાવતા મૂળ અક્ષરમૂર્તિ ગુણાતીતાનંદસ્વામીએ કહ્યું છે –
'સ્વામિનારાયણ' મંત્ર *મહાબળિયો (બળિયો નહીં, મહાબળિયો) છે.*
આ મંત્રના જાપથી–

૧. *કાળા નાગનું ઝેર પણ ઊતરી જાય.*
૨. *જીવ પંચવિષયના રાગથી મુક્ત થઈ જાય.*
કેવા ભવ્ય વરદાન આપી દીધા ! દરેકને 'વિષયો' પજવે છે. પ્રગટના ઉપાસકો માટે મનધાર્યું કરવું

એ 'વિષય' છે. આપણને બ્હારના કોઈ 'વિષયો' ખેંચી નહીં શકે. જુઓ, આપણે ડોઢ કલાકથી અહીં મહાપૂજામાં બેઠા છીએ. બ્હાર તો 'વિષય'ના કેટલા ઢોલ વાગે છે, પણ તમોને એ ખેંચી શક્યા ? આમ, બ્હારના 'વિષયો' તો આપણને પજવે નહીં; પણ મનધાર્યું જીવવું, મનધાર્યું કરવું– એ પજવી જાય છે. આપણે આ મંત્રનો જાપ કર્યા કરીએ, તો એ વૃત્તિ પણ ટળી જાય.

૩. *જીવ બ્રહ્મરૂપ થઈ જાય છે.*

જીવની આ ચરમ અવસ્થા! બ્રહ્મરૂપ થઈ જઈએ એટલે– ભગવાન આપણામાં અખંડ નિવાસ કરીને રહે. આપણે ભગવાનના અખંડ વાહક-ધારક બની જઈએ.

૪. *દેહમાં રોગ આવ્યો હોય તે મટી જાય.*

ઔષધ અસર કરવા મંડે. આ ય એક મોટો પ્રભાવ છે, પણ આપણે અજમાવતા નથી.

૫. *કાળ, કર્મ ને માયાના બંધનથી મુક્તિ મળે.*

૬. *મૂંઝવણ ટળી જાય.*

મૂળ અક્ષરમૂર્તિ ગુણાતીતાનંદસ્વામીએ પણ પોતાની વાતોમાં આશીર્વાદ આપ્યા –

''મૂંઝવણ આવે તો 'સ્વામિનારાયણ-સ્વામિનારાયણ' ભજન કરવું, તેથી મૂંઝવણ ટળી જાય.''

અંતરમાં વાગેલા ઘા રૂઝાવા આત્માને જે બળ જોઈએ– એ પણ, આ મંત્ર આપે છે.
અંતઃકરણના ઘા પણ આ મંત્રના જાપથી રૂઝાઈ જાય.
ઘણી વાર વગર કારણે મન વ્યાકુળ/ઉદાસ/ બેચેન થઈ જાય છે. મેં કહ્યું પણ છે કે–
કોઈ પણ પ્રકારની મુસીબત/સંકટ કે મૂંઝવણ હોય, તો આ 'કલ્પવૃક્ષ' હૉલમાં બેસીને, **મૂર્તિઓના દર્શન કરતા રહી**, ભજન કરવા મંડી પડો. મૂર્તિઓ પણ ખૂબ સોહામણી છે.
પણ, આપણે નકામા આમ-તેમ રખડતા હોઈએ છીએ.
હૉલમાં આવી, બેસીને સ્વામિનારાયણ, સ્વામિનારાયણ, સ્વામિનારાયણ... ભજન કરીશું, તો ૧૫-૨૦ મિનિટમાં જ માઈન્ડ એકદમ રિલેક્સ - ફ્રેશ થઈ જશે.
પ.પૂ. કાકાજી તો કહેતા– ***'સ્વામિનારાયણ'*** *મંત્ર છૂટથી વાપરો...*
મોકળા દિલે - મોકળે મને વાપર્યા કરો. ભગવાને આપણને આ જે શસ્ત્ર આપ્યું છે, એને આખા નવા વરસ દરમ્યાન અજમાવજો. કહેવાય છે ને કે રામની મૂર્તિથી અધિક એમનું નામ પાવરફુલ છે. આ તથ્યને પકડી ૨૦૧૬ના વર્ષમાં આપણે છૂટથી **'સ્વામિનારાયણ'** મંત્રને વાપરતા રહીએ. વગર કહે મહારાજ આપણી દરેક પળે -દર પ્રકારે રક્ષા કરતા જ રહેશે.

પ.પૂ. કાકાશ્રીને તો અમે જોયા છે કે તેઓએ પોતે લગાતાર મંત્રજાપ કર્યા કર્યો ને અમને પણ કરાવતા રહ્યા. મારા ધારવા પ્રમાણે સમગ્ર સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના બધાં જ મંદિરો ને કેન્દ્રોમાં મળીને જેટલી ધૂન થઈ હશે, એથી વિશેષ ધૂન પ.પૂ. કાકાજી પાસે તાડદેવમાં થઈ હશે. એઓ તો કેટલા બુદ્ધિશાળી ? છતાં, દરેક સમસ્યાના સમાધાન પણ એમણે ધૂનથી જ આપ્યા. માટે બુદ્ધિશાળી એ કે જે ભજન કરે– ભજનનો જ આધાર લે.

આત્માનો ખોરાક 'ભજન' છે. ધૂન-પ્રાર્થના આપણા જીવનમાં સર્વોત્તમ કામ કરશે, કરશે ને કરશે જ. એથી, આપણને જે સુખ-સગવડ મળ્યા છે, એનો આનંદ માણી શકીશું ને જીવનમાં સરસતા પ્રગટશે.

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का प्राकट्य पर्व – स्वर्ण दीक्षा महोत्सव...

महाप्रासादिक सुरत की धरा अत्यधिक धन्य हुई जब 3 जनवरी 2016 के मंगल सायं, **'आत्मीय युवा अधिवेशन'** के रूप में, प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी का प्राकट्य पर्व एवं स्वर्ण दीक्षा महोत्सव संतों, युवकों, बहनों एवं गृहस्थ समाज ने हर्षोल्लास से मना कर गुरुभक्ति अदा की।

गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा दीक्षित एवं उनकी कृपा के पात्र प.पू. स्वामिजी के अथक परिश्रम से आज देश-विदेश की धरती पर एक ऐसा आत्मीय समाज तैयार हुआ है जिनके जीवन में प्रगट प्रभु एवं उनके भक्तों के सिवा अन्य किसी का स्थान नहीं; प्रभु एवं उनके अखंड धारक संत की मूर्ति के सुख से बढ़ कर लौकिक सुख की कोई चाह नहीं। इसका मूलभूत कारण है कि प.पू. स्वामिजी ने अपना पूरा जीवन योगी के संबंध वालों के लिए समर्पित कर दिया। संबंध में आए भक्तों की व्यथा को समझा; उनके दुःख के साथी व सुख के भागीदार बने। यूँ कहें कि अपने प्यारे भक्तों के व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक उत्थान हेतु उन्होंने अपना अस्तित्व ही विलीन कर दिया! बदलते युग में जीवन ध्येय से भटक रहे युवा वर्ग की चेतना को जाग्रत किया है और उनमें प्रभुभक्ति-गुरुभक्ति का सिंचन किया है। इस हेतु उन्होंने हर एक की कक्षा के अनुसार वर्त कर उसे एहसास कराया कि **'स्वामी मेरे हैं।'** दरअसल यही अपनत्व सच्चे संत की व्याख्या है। और... ऐसे संत की आज्ञानुसार, स्वधर्म में रहते हुए, दिव्य जीवन जीता समाज ही उनका परिचय है। प.पू. स्वामिजी के रूप में मिले जीव के प्रहरी, कंचन जैसी अपनी शुद्ध वाणी से इस दिव्य समाज का निरंतर पोषण कर रहे हैं। **'अमृत आचमन'** शीर्षक अंतर्गत प.पू. स्वामिजी की परावाणी के सूत्रों से आज लाखों मुक्त ई-मेइल द्वारा लाभांवित हो रहे हैं। आइए, प.पू. स्वामिजी के स्वर्ण दीक्षा महोत्सव के अवसर पर हम सब भी कुछ सूत्रों से लाभ प्राप्त करें...

* जीनीयस व्यक्ति कभी भी अपने मन-बुद्धि के मूल्यांकनों का पोषण नहीं करते। वे अपने ध्येय से कभी डांवाडोल नहीं होते। वे हाईवे पर से कभी नीचे उतरते नहीं...

  तुम यदि जगत को छोड़ दोगे, तो जगत तुम्हारे पीछे आएगा। तुम मन-बुद्धि को छोड़ दोगे, तो मन-बुद्धि तुम्हारा साथ देंगे (तुम्हारी मरजी अनुसार चलेंगे।) लेकिन, पहले आपको अपनी मन-बुद्धि की अवहेलना करनी होती है। फिर यही मन-बुद्धि तुम्हें सकारात्मक बनाते हैं, तुम्हारा साथ देते ही हैं। फिर, तुम जैसा कहो, वैसा वे करेंगे ही। **21.1.95**

* सन् 1956 में हम पहली बार ताड़देव गए थे... फिर 1965 में साधु बनने के समय काकाजी, पप्पाजी, बा के आशीर्वाद लेने के लिए गए... इतने वर्षों के दौरान इनके मुखारविंद पर हमने कभी कोई ग्लानि-चिंता-शोक नहीं देखा! आनंद में रहते और सभी को आनंद में रखते। प्रेम देते ही रहे। अखंड महिमा की बातें ही निकलती। तनिक भी भेददृष्टि दिखाई न देती। कोई तारतम्यता न दिखती। 51 संत बनाने के समय काकाजी ने खूब-खूब सहन किया। कष्ट सहे, अपमानित किए गए... लेकिन उनके हृदय में महिमा थी... योगी के बालक धरती पर कहाँ से? **22.1.95**

* **'निजात्मानम् ब्रह्मरूपम्...'** इस श्लोक का मर्म शायद हमें समझ न आए और इस रीति से हम वर्त न पाएँ... लेकिन हम सबका फर्ज़ है कि–

  'दास का दास होकर, रहे जो सत्संग में; भक्ति उसकी नेक जानूं मैं, झूमूंगा उसकी ताल में...'

  इस अद्भुत आशीर्वाद को आत्मसात् करें।

सुखी होना हो तो 'परावाणी' में अविश्वास नहीं करना। स्वामी की बातों, वचनामृत–युग पुरुषों की वाणी में कभी भी अविश्वास नहीं करना...

फलस्वरूप, कैसा भी बुरा प्रारब्ध बदल जाएगा... कैसी भी प्रकृति पॉज़िटिव हो जाएगी... पवित्र हो जाएगी... भक्तिप्रधान हो जाएगी...

दासत्वयुक्त हो जाएगी... **17.5.14**

* किंचित् भी अपेक्षा या बौद्धिक गिनतियाँ न रखते हुए हमें 'संबंध' की ही दृष्टि रखनी चाहिए।
* अक्षर के अनादि महामुक्तों के जीवन का हर पल-हर सैकन्ड समस्त गुणातीत समाज से खूब आत्मीयता से बढ़े, ऐसा होना चाहिए। हम ही 'माँ' नहीं बनेंगे, तो कौन बनेगा? हम सभी को अपने नहीं बनाएँगे, तो कौन बनाएगा? हम सेवक नहीं बनेंगे, तो कौन बनेगा? हम मरजी में नहीं वर्तेंगे, तो कौन वर्तेगा? सत्पुरुष जब हम पर बड़ी जवाबदारी लादना चाहते हैं, तो हम क्यों न तैयार हों! सत्पुरुष ने हमें अज़ीज़ माना है, तो हम वह स्वीकारने के लिए तत्पर क्यों न हों! सत्पुरुष हमें अपनी गोद में रख कर, कृपादृष्टि से ज़हमत उठा कर, गरजु बन कर कोई बात समझाने का प्रयत्न करें, तो हम ही बड़े पुरुष के आकार के क्यों न हो जाएँ! **27.3.81**
* दिल की सच्चाई से-अहोहोभाव से मुक्तों को मान देते रहेंगे तो प्रभु हमें बुद्धियोग देकर निर्मानी बना देंगे। वर्ना, किसी भी संजोग में हम निर्मानी हो नहीं सकते। लेकिन, मुक्तों को अहोहोभाव से मान देकर, उनका स्वीकार करके स्थूलभाव से गुणगान गाएँगे, तो प्रभु हमें बुद्धियोग देकर निर्मानी बना देंगे। **12.3.83**
* 'आत्मीयता' उर्ध्वगति का मार्ग है... उत्थान का मार्ग है... काम और मान की वृत्ति में से बाहर निकल आने के लिए सुगम मार्ग है। **27.2.95**
* भगवान की देह में अनंत कल्याणकारी गुण ही नहीं हैं... वे तो 'गुण के दातार' (देने वाले) हैं...

  भक्तों को आनंद करवाने के लिए वे स्वतंत्ररूप से गुण को ग्रहण करते हैं। प्रभु का शरीर चिदाकाशी है। उनका गुण से कोई संबंध नहीं है।

  भक्तों को आनंद करवाने के लिए, सूझ देने के लिए, भक्तों में ओतप्रोत होने के लिए, भक्तों को स्व स्वरूप का ज्ञान देने के लिए, अपनी कुछ पहचान कराने के लिए ऐसा रंकभाव, गरीबभाव, स्वधर्म, साधुता... स्वयं स्वतंत्ररूप से ग्रहण करते हैं।

  उनके गुण और दोष दोनों को एक समान मानें – यही हमारे लिए 'निष्काम धर्म' है... और तब ही प्रभु बुद्धियोग देते हैं... हृदय बदल देते हैं। **3.9.95**
* सत्पुरुष जिस पर अधिकार कर सके, उसे ही कृपा का पात्र कहा जाए। बिना किसी कसूर सत्पुरुष जिस पर रौब झाड़ा करे, उसे ही कृपा का पात्र कहा जाए। भगवान स्वामिनारायण मूलजी ब्रह्मचारी को खूब डाँटते-फटकारते, झिड़कते; लेकिन, धन्यवाद इन ब्रह्मचारी को कि वह हँसते ही रहते... हँसते ही रहते... इन सब के पीछे महाराज की एक ही भावना थी कि 'हमें अपने लीला चरित्रों में पिरोए रखें...' जब तक लीला चरित्रों में तुम निमग्न नहीं रहोगे, तब तक तुम्हारा मूलभूत सात्त्विक अहम् टलेगा नहीं। जैसे सत्पुरुष की डाँट-फटकार, टोका-टाकी को हमें स्वीकार करना है, वैसे ही संबंध वाले सभी की टोक-डाँट का भी स्वीकार करना है... फिर महाराज राज़ी राज़ी... **15.3.02**

व्रतोत्सवसूची

1. दि.20.1.2016, बुधवार – एकादशी – व्रत
2. दि. 23.1.'16, शनिवार – पोषी पूर्णिमा – मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी का दीक्षा दिन
   ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का स्वधामगमन दिन
3. दि. 25.1.'16, सोमवार – **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की स्मृति में**
   सायं 6:30 बजे दिल्ली मंदिर में अखंड परिक्रमा का शुभारंभ
4. दि. 26.1.'16, मंगलवार – प्रजासत्ताक दिन,
   सायं 6:30 बजे अखंड परिक्रमा की पूर्णाहुति
5. दि. **3.2.'16**, **बुधवार** – **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन,**
   श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर :
   दिल्ली - मुंबई का पाटोत्सव दिन
6. दि. 4.2.'16, गुरुवार – एकादशी – व्रत
   ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की स्वधामगमन तिथि
7. दि. 12.2.'16, शुक्रवार – बसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती,
   ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज का प्राकट्य दिन
8. दि. 15.2.'16, सोमवार – **प्र.ब्र.स्व. अक्षरविहारीस्वामिजी का 81वाँ प्राकट्य दिन**
9. दि. 18.2.'16, गुरुवार – एकादशी – व्रत
10. दि. 5.3.'16, शनिवार – एकादशी – व्रत
11. **दि. 7.3.'16, सोमवार** – महाशिवरात्रि, व्रत *(दिल्ली मंदिर में सुबह 9:30 बजे 'लघुरुद्र')*
    ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन
12. दि. **9.3.'16, बुधवार** – **प.पू. गुरुजी की 79वीं प्राकट्य तिथि (फाल्गुन शुक्ल - 1)**
13. दि.**13.3.'16, रविवार** – **प.पू. गुरुजी का 79वाँ प्राकट्य दिन ,**
    ताड़देव मंदिर में प्राकट्योत्सव सायं 5:30 बजे से...
14. दि. 19.3.'16, शनिवार – एकादशी – व्रत
15. दि. 22.3.'16, मंगलवार – होली, होलिका दहन, **ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज की जयंती**
16. दि.**23.3.'16, बुधवार** – धुलेन्डी, **संत भगवंत प.पू. साहेबजी का अमृत पर्व**
17. दि.**24.3.'16, गुरुवार** – दिल्ली मंदिर में धुलेन्डी का चंदनोत्सव – सुबह 9 : 00 बजे से...

* विशेष महत्त्व की बात *

आजकल हर व्यक्ति मानो दौड़-सा रहा है। भागदौड़ के ऐसे माहौल में दुर्घटनाएँ सहज ही होती हैं।

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज अकसर कहते –

कोई भी कार्य प्रभु के नाम का नमक डाल कर करो।

गुणातीत समाज से जुड़े **सभी आत्मीय मुक्तों - हरिभक्तों** से

नम्र निवेदन, विनती, प्रार्थना या आख़िरकार कहिए कि आज्ञा है –

★ **कहीं से भी बाहर निकलने से पूर्व, प्रभु से साथ चलने की प्रार्थना करके ही कदम बढ़ाएँ।**

★ **सरकार की कड़ी पाबंदी भले ही न हो, लेकिन स्कूटर, बाइक या स्कूटी पर दूर या पास ही कहीं भी जाने वाले मुक्त (पीछे बैठने वाले भी) हॅल्मेट, और वो भी ISI मार्क वाला, पहन कर ही बैठें।**

इसी प्रकार –

★ **गाड़ी में भी चालक एवं साथ वाली सीट पर बैठने वाले – यानि दोनों मुक्त सीटबेल्ट अवश्य लगा कर बैठें।**

हमारी इस बात को मान कर आप हमें अपनी ओर से निश्चिंतता प्रदान करें...

'सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु - मा कश्चित् दुःखमाप्नुयात्' की शुभेच्छा के साथ

અમારે ગુરુજી ને જય સ્વામિનારાયણ।

सूचना

2016 – नया वर्ष प्रारंभ हो चुका है।

'भगवत् कृपा' से लाभांवित होते सभी मुक्तों से

वार्षिक चंदा – भारत के लिए **₹ 111** एवं **विदेश** के लिए **₹ 555** भेजने की नम्र विनती है।

यदि अब तक कुछ भी चंदा न दिया हो तो एक ही बारी **कम से कम ₹ 551** भेज कर,

2015 तक का पिछला सारा बकाया भी आप पूरा कर दें।

R.N.I. 28971/ 77 *(Air Mail)*

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO** ***FOR*** **YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052